



## आंतराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय पैष्ठव परिषद्



### ८६ - परः

श्रीआचार्यज्ञु क्षार अने अक्षरथी पर छे.

#### अर्थ - चरित्र - संगतिः

श्रीआचार्यज्ञु क्षार अने अक्षरथी पर पुरुषोत्तम स्वरूप छे. अने ज्यां आवा पुरुषोत्तमनी लीला रसनुं गान थाय छे त्यां अन्यरसोनो विलय थावो ते स्वाभाविक छे. श्रीआचार्यज्ञुना ऐवा पर पुरुषोत्तम स्वरूपनां दर्शन दाखोदरदासने भानसरोवर उपर थायां हुतां. आप पुरुषोत्तम रसात्मक होवाथी आपना रस प्राख्यत्ये भक्तोना हृदयभांथी अन्य रसोने हटावी दे छे. आ नाम “ऐश्वर्य - धर्म” सूचक छे.

#### चित्र - परिचयः

भान सरोवर उपर श्रीआचार्यज्ञु दाखोदरदासने पुरुषोत्तम स्वरूपे दर्शन आपे छे.

#### नाम - संगतिः

भक्तोना अन्य रसो विलय थाया भाइ श्रीआचार्यज्ञु ना विशिष्टेक्षरतः क्षारात् ऐवा परात्पर स्वरूपस्थित लीलारसनुं योजन आपश्री भक्तोमां केवा प्रकारे करे छे तेनुं निरुपाण “लीलाभूतरसार्दाई इताजिलशरीरभृत” नामथी करे छे.